वैदिककाल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

डा० सुर्य भूषण मणि

वैदिक काल (1500 ई0पू0 से 600ई०पूर्व) को इतिहास के दृष्टिकोण से दो रूपों में विभाजित किया जा सकता हैं, ऋग्वैदिक काल (1500 ई0पू0 से 1000 ई०पूर्व) एवं उत्तर वैदिक काल (1000 ई0पू0 से 600ई0पूर्व)। जिनमें स्त्रियों की स्थिति में अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में भी परिवर्तन आते रहें। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी उन्हें परिवार तथा समाज में सम्मान प्राप्त था एवं शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। अनेक मंत्रों की रचनाकार स्त्रियों अपाला,घोषा, विश्ववारा, मैत्रयी इत्यादि के नाम मिलते हैं। स्त्रियों को विवाह हेतु वर चयन करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। स्त्रियों की धार्मिक अनुष्ठानों में उपस्थिति अनिवार्य थी। वे जननी के रूप में पूजक थी, परिवार तथा समाज में सम्मान प्राप्त था एवं सभा व समितियों में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था, किन्तु ऋग्वैदिक काल में कहीं–कहीं पर कुछ ऐसी उक्तियाँ हैं जिनमें उनका विरोध भी दिखलाई देता है।

उत्तर वैदिक काल तक आते–आते स्त्रियों के सम्मान, कर्म, अधिकार में उत्तरोत्तर अवनति दिखलाई पड़ती है। मैत्रेयी संहिता में स्त्रियों को निम्नकोटि का बताया गया है। उनके लिए निन्दनीय शब्दों का प्रयोग भी होने लगता है। उनकी स्वतन्त्रता पर अनेक प्रतिबन्ध लगाये जाने लगे। ब्राहाण गन्थों में स्त्रियों पर अंकुश लगाने जैसे नियम देखने को मिले।